गौरा पंत - शिवानी

भारतीय नारी पर आधारित काल्पनिक कथाओं को लिखने वाली गौरा पंत (शिवानी) हिंदी साहित्य में एक प्रसिद्ध नाम है | उनका जन्म 17 अक्तूबर, 1923 को राजकोट, गुजरात में हुआ था | उनके पिता अश्वनी कुमार पाण्डे कुमाउंनी ब्राह्मण थे | वे एक विद्यालय में अध्यापक थे | उनकी माता संस्कृत की विदुषी थीं |

उनकी शिक्षा शान्ति निकेतन में हुई | साठ और सत्तर के दशक में, उनकी लिखी कहानियां और उपन्यास हिंदी पाठकों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुए और आज भी लोग उन्हें बहुत चाव से पढ़ते हैं | 12 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने 'नटखट' रचना प्रकाशित कराई | उनका विवाह उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में कार्यरत सुखदेव पंत के साथ हुआ | कम आयु में ही उनके पति का देहांत हो गया |

वर्ष 1951 में उनकी कहानी 'मैं मुर्गा हूं' धर्मयुग पत्रिका में छपी और वह गौरा पंत से शिवानी बन गईं | उनका पहला उपन्यास 'लाल हवेली' था | उन्होंने 40 उपन्यास लिखे | उन्होंने स्वयं स्वीकार किया की उनकी रचनाएं बंगाली लेखक बंकिम चन्द्र चटर्जी से प्रभावित थीं | हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1982 में पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया |

उनकी प्रमुख कृतियां हैं -

उपन्यास	कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, पूतों वाली, चल खुसरो घर आपने, शमशान चंपा, मायापुरी, कैंजा, गेंदा, भैरवी, स्वयंसिद्धा, विषकन्या, रति विलाप, आकाश
कहानी संग्रह	शिवानी की श्रेष्ठ कहानियां, झरोखा,
संस्मरण	अमादेर शान्ति निकेतन, स्मृति कलश, वातायन,
यात्रा वृतांत	चरैवैति, यात्रिक
आत्मकथा	सुनहूं तात यह अमर कहानी

अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक वह लिखती रहीं तथा 21 मार्च, 2003 को नई दिल्ली में उनका देहावसान हो गया |